प्रातः क्लास 23-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

****

ओमशान्ति। बाप बैठ कर के सभी के आत्माओं को समझाते हैं। शरीर भी याद पड़ती है तो आत्मा भी याद पड़ती है। शरीर बिगर आत्मा को याद नहीं किया जा सकता। समझा जाता है वह आत्मा अच्छी है। इस आत्मा को क्या शोक है, यह बाहरमुखी है, यह इस दुनिया का सैर आद करनी चाहिती है, उस दुनिया को भूली हुई है। पहले उनकानाम-रूप सामने आता है। फ्लाने की आत्मा को याद किया जाता है। फ्लानी की आत्मा अच्छी सर्विस करती है। इनका बुधि योग बाप के साथ है। इन में यह यह गुण हैं। पहले शरीर को याद करने से फिर आत्मा याद आती है। पहले शरीर याद आवेगा क्योंकि शरीर बड़ी चीज़ है ना। फिर आत्मा तो सूक्ष्म बहुत छोटी है वह याद आवेगी। इन बड़े शरीर की कोई महिमा नहीं की जाती है। महिमा आत्मा की ही की जाती है। इनकी आत्मा अच्छी सर्विस करती है। फ्लानी की आत्मा इन से भी अच्छी है। पहले तो शरीर याद आता है। इनको अनेक शरीर अनेक आत्माओं को याद करना पड़ता है। शरीर का नाम याद नहीं आता। सिर्फ रूप याद आता है। फ्लाने की आत्मा कहने से शरीर जरूर याद पड़ता है। जैसे तुम समझते हो इस दादा के शरीर में शिव बाबा आते हैं। चलते-फिरते हो बाबा के साथ हो। जानते हो इनके तन में बाबा है। शरीर जरूर याद पड़ेगा। पूछते हैं हम कैसे याद करें। शिव बाबा को ब्रहमा तन मे याद करें या परमधाम में याद करें। बहुतों का यह प्रश्न उठता है। बाबाकहते हैं याद तो आत्मा को करना है। परन्तु शरीर भी जरूर याद पड़ता है। पहले शरीर फिर आत्मा। बाबा इनके शरीर में बैठा है तो शरीर जरूर याद आवेगा ना। फ्लाने शरीर वाली आत्मा में यह गुण है, यह अवगुण है। बाप भी देखते रहते हैंकौन मुझे याद करते हैं। किस में बहुत गुण है। किस फूल में खुशबूएं हैं। फूलों से खिल रहती है। गुलदस्ता बनाते हैं उसमें तो राजा-रानी प्रजा, भिन्नफूल, पत्ते आद सभी डाल देते हैं। बाबा की नज़र तो फूलों के तरफ जावेगी। कहेंगे मनोहर की आत्मा बड़ी अच्छी है। बड़ी सर्विस करती है। भल सर्विसबहुत है, यहां-वहां भागना पड़ता है फिर भी आत्मभिमानी में रह बाप को याद करते रहते हैं। जहां सर्विस देखते हैंवहां भागती है। फिर सबेरे उठ कर याद में बैठती होंगी* तो किसको याद करती होंगी। शिव बाबा को परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा। बाबा याद आता होगा ना। इस में शिव बाबा है। क्योंकि बाप तो अभी नीचे आगया है। मुरली चलाने नीचे आये हैं। उनको अपने घर में तो कोई काम नहीं होगा। वहां क्या जाकर करेंगे। इस तन में ही प्रवेश करते हैं। तो पहले जरूर शरीर याद आवेगा। फिर आत्मा। फ्लाने शरीर में जो आत्मा है यह बड़ी अन्यन्य अच्छी है। उनकोसर्विस बिगर और कोई चीज़ सुझता नहीं है। बहुत मीठी है। बाबा बैठे रहते हैं तो सभी कोदेखते रहते हैं। फ्लानी बच्ची बहुत अच्छी है। बहुत याद करती है। बान्धेली बच्चियों को विकार के लिए कितनी मार मिलती है। कितनाप्रेम से याद करती होंगी। इस समय का हिसाब किताब है। कर्मों की गति है ना। जब बहुत याद करती है तो खुशी के मारे प्रेम के आसूं भर आते हैं। कब वह आंसू गिर भी पड़ते हैं। बाबा को और धंधा क्या क्या होता है सभी को याद करते हैं। बहुत बच्चियां याद आती हैं। इस आत्मा में तो कुछ भी दम नहीं है। बाप को याद ही नहीं करती है। इनकी आत्मा बहुत चंचल है। किसको भी सुखनहीं देती है। यह अपना कल्याण ही नहीं करते। बाप तो यही जांच करते रहेंगे। याद करना माना उसको साकाश मिलती है। आत्मा का परमात्मा साथ कनेक्शन रहता है ना। एकदिन आवेगा जब कि योगबल में बहुत रहेंगे। यह भी किसको याद करेंगे तो झट उनको बाप का सा० हो जावेगा। है तो बहुत छोटी बिन्दी। सा० हो भी तो समझ न सकेंगे* कि यह क्या है। फिर भी शरीर ही याद आता है। आत्मा है बहुत छोटी। परन्तु याद करते हैंतो उनकी आत्मा पावन बनती जाती है। कोई में तो कुछ भी खुशबूएं नहीं है। यह आत्मा कोई काम के नहीं हैं। बाबा को बगीचा याद पड़ता है। यह ब्राह्मण टांगर, यह अक, यह रूप ज्योत बिलकुल हो बाप को याद नहीं करते हैं। बाप याद उन बच्चों को करते हैं जो सर्विस अच्छी करते हैं। बाप

को याद करते हैं। वह बाप को बहुत ही प्यारे लगते हैं। उनकी जो खुशबूएं आवेंगी वहां भी वह अच्छे2 फूल बनेंगे। ग्र बगीचे में वैराईटी2 के फूल होते हैं ना। बाबा भी देखते हैं यह बहुत अच्छा खुशबूएं न्दारफूल है। यह इतनानहीं। पद भी कम होंगा। बाप के जो मददगार बनते हैं। वही ऊंच पद पाते हैं। वह भी जो बाप को याद करते रहते हैं। ब्राहमण से देवता फिर ट्रन्सफर भी ऐसे ही होते हैं। कोई आत्मातो जैसे एकदमअक के फूल। हर एक के गुण तो याद आते हैं। यहां बाबा के पास आते हैं तो सुनाते हैं अथवा लिखत भी है हमारे में यहयह अवगुण है। यह वर्णन भी संगम युग पर ही कर सकते हैंकि यहग्रह देवी फूल है या आसुरी फूल है। फूल तो भिन्न2है। परन्तु उनमें वैराईटी बहुत है। बाबा याद करते रहते हैं। टीचर अपने स्टुडन्ट को देखेंगे ना यह कम पढ़ते हैं। दिल में तो समझेंगे ना। यह बाप भी है टीचर भी है। बाप तो है ही, बैठे हैं। टीचरपने का जास्ती चलता है। टीचर को रोज पढ़ाना पड़े। इस पढ़ाई के ताकत से वह पद पाते हो। सुबह को सबेरे गुरु बन बैठते हैं, याद की यात्रा में। इस समयटीचर बन बैठते हैं। बाप तो है ही। सुबह में तुम भाईयों को बाप की याद में बैठाते हैं। वह सबजेक्ट है याद की। फिर मुरली चलती है। यह है पढ़ाई की सबजेक्ट। मुख्य है ही योग और पढ़ाई। बस। उनको ज्ञान-बिज्ञान भी कहा जाता है। बिज्ञान भवन नाम भी रखा है। परन्तु अर्थथोड़े ही जानते हैं। कोई सखी का नाम रख दिया है। अभी हम कहेंगे यह ज्ञान-बिज्ञान भवन है। जहां बाप आकर सिखलाते हैं। ज्ञान से सारी सृष्टि की नालेज मिल जाती है। बिज्ञान अर्थाततुम योग में रहते हो। जिस से पावन बन जाते हैं। तुमको अर्थ समझता है। अभी बाबा द्वारा तुमको सारी दुनिया का भी मालूम पड़ता है। तो बाबा बच्चों को देखते रहते हैं। इसमें बहुत भूत है। देहअभिमान वालों में भूत होता है। देही अभिमानी बनने से ही भूत निकलेंगे। ऐसे नहीं कि सभी की मूल भूत निकल जावेंगी। फट से नहीं। हिसाब किताब सब चुक्तु हो। अपने चलन अनुसार ही फिर पद पावेंगे। क्लास ट्रन्सफर होते हैं। वह होते हैं हद के क्लास। ट्रन्सफर जरूर ऊपर वाले ही क्लास में होंगे। अभी इस दुनिया की ट्रन्सफर नीचे हो रही है। और तुम्हारी ट्रन्सफर ऊपर हो रही है। कितना फर्क है। वह कलियुगी सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं। और तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर सीढ़ी ऊपर चढ़ते हो। दुनिया तो यही है सिर्फ बुधि का काम है। तुम कहते हो संगमयुगी हैं। पुरुषोत्तम बनाने लिए बाप को आना पड़ता है। तुम्हारे लिए अभह यह पुरुषोत्तम संगम युग है। बाकी तो वह सभी भक्ति मार्ग के घोर-अंधियारे में हैं। भक्ति को वह बहुत ही अच्छा समझते हैं। क्योंकि ज्ञान का उन्हों को मालूम नहीं है। है ही भक्ति मार्ग। जब ज्ञान मिले। तुमको अभी ज्ञान मिला है तो तुम समझते हो भक्ति में हम नीचे ही उतरते थे। ज्ञान के एक चिटके से ही आधा कल्प लिए हम चढ़ जाते हैं। फिर वहां तो ज्ञान की बात भी नहीं होंगी। यह सभी बातें महारथी बच्चे ही सुन कर धारण कर औरसुनाते रहेंगे। बाकी तो यहां से बाहर निकले और खलास। कर्मों की गति ऐसी है। कर्म विकर्म अकर्म की गति भी भगवान ही बताते हैं। जब समय होता है। यह है कल्प का संगम युग। पुरानी दुनिया ग्र खत्म और नई दुनिया की स्थापना होनी है। विनाश सामने खड़ा है। तुम संगम युग पर खड़े हो। और मनुष्यों के लिए कलियुग चल रहा है। कितना भक्ति के घोर-अंधियारे में हैं। गिरते ही रहते हैं। कोई तो निमित भी हैं। हां रावण। 5विकारों को रावण कहा जाता है। भ्रष्टाचारी से विकार पैदा होते हैं। सतयुग में भ्रष्टाचारी अक्षर नहीं होता। इस सभा में भी वास्तव में भ्रष्टाचारी कोई रह न सके। जब तुम जोर भरें के फिर यह भी होंगा। तुम को झट मालूम पड़ जावेंगा। यह भ्रष्टाचारी तो यहां का वायुमंडल खराब कर देंगे। यह आगे चल पता पड़ेंगा। अभी नहीं। ऐसे छीप कर जो आकर बैठते हैं उनको चोट भी बहुतलगती है। एकदम गिर पड़ेंगा। ईश्वर के सभा में दैत्य बन बैठेंगा। तो झट पता पड़ेंगा। पत्थर बुधि तो हैं ही। बाकी भी पत्थर बुधि हो जावेंगा। सोणा डुन्ड पड़ जावेंगा। अपन को ही नुकसान पहूंचावेंगे। कहते हैं हम विकार में जाये क्लास में आकर बैठते हैं। देखो

इनको पता पड़ता है है कि विकारी हैं। हमको क्या पड़ी है जो करेंगा खुद ही भोगेगा। हमको यह जानने की भी दरकार नहीं है। उनको कहा जाता है आसुरी योग। दुःख देने वाले। कचहरी में सब कोई सच्च थोड़े ही बताते हैं। बहुत छिपाते हैं। या कहते हैं पीछे बताऊंगा। यह भी देह अभिमान हो गया। सभी के आगे सुनाने से कहेंगे यहतो कितना सच्चा है। बाबा को मालूम तो सभी पड़ता है ना। गाया जाता है "सच्च तो बिठो नच"। सच्च कहेंगे ते डांस करेंगे। अपने राजधानी में। बाप है ही टुथ। तो बच्चों को भी कितना सच्चा बनना चाहिए। कभी भी झूठ नहीं।

बाबा बच्चों से पूछते हैं शिव बाबा कहां हैं तो कहते हैं इसमें ही हैं। परमधाम को छोड़ कर दूर देश के रहने वाले आये हैं देश पराये। उनको तो अभी बहुत ही सर्विस करनी है। वहां जाकर क्या करेंगे। बाप कहते हैं मुझे रात दिन यहां सर्विस करनी पड़ती है। वहां जाकर क्या करेंगे। यहां बहुत सर्विस करनी पड़ती है। संदेशियों को भक्तों को भी सा० कराते हैं। है तो यहां ही। वहां तो कोई सर्विस ही नहीं। सर्विस बिगर बाबा को सुख नहीं। सारी दुनिया की ही सर्विस करनी है। सभी पुकारते हैं बाबा आओ। कहते हैं मैं इसरथ में आता हूं। मनुष्य नहीं जानते हैं तो उन्होंने घोड़गाड़ी बनाये दिये हैं। अभी घोड़गाड़ी में कृष्ण कैसे बैठेंगा। ऐसे भी नहीं कोई शौक होता है घोड़गाड़ी पर चढ़ने की। कोई शाहुकारों को कर के कब दिल होती है गाड़ी पर सवारी कर के देखें। वहां तो ऐसी चीज़ होती नहीं। अमेरिकन यहां आते हैं थे तो उन्हों को घोड़े गाड़ी में बड़ा मजा आता था। इसमें अपनी बड़ाई का नहीं रहता है। वहां तो ऐसी चीजें होती ही नहीं। देह अभिमानी औ देही अभिमानी बनने की बातें भी सिवाय संगम युग के कब होती नहीं। देही अभिमानी और देह अभिमानी का ज्ञान भी सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। तुम भी अभी जानते हो। आगे थोड़े ही जानते थे। क्या कोई गुरु ने सिखाया। गुरु तो बहुत किये कोई ने नहीं सिखाया। बहुत गुरु करते हैं समझते कोई से शान्ति का रास्ता मिल जावेंगा। बाप कहते हैं शान्ति का सागर तो एक ही है। वह ही साथ ले जाते हैं। सुखाधाम शान्तिधाम का भी किसको पता नहीं है। अपने को कोई शुद्र समझते नहीं हैं। कलियुग में शुद्र वर्ण। इन वर्णों का भी तुम्हारे सिवाय और किसको पता नहीं है। यहां सुनते हैं फिर बाहर जाने से भूल जाते हैं। धारणा होती नहीं। बाप कहते है कहां भी जो हो, बेज पड़ा हुआ हो। इसमें लज्जा की तो बात ही नहीं। यह तो बहुत कल्याण के लिए बाप ने बनवाई है। किसको भी समझा कर दो। कोई अच्छा सेन्सीबुल मनुष्य होंगा तो कहेंगा इस पर आप का खर्चा हुआ होंगा। बोलो खर्चा तो होता ही है। गरीबों के लिए फ्री है। वह भी धारण कर ले वे तो बहुत ऊंच पद पा सकते हैं। पैसा है तो नहीं तो क्या करेंगे। किसके पास पैसे परन्तु बहुत मनहूस भी होते हैं। इस ने तो प्रैक्टीकल कर के दिखाया। ममत्व तोड़ना तो फादर से सीखो। इसने भी सभी कुछ माताओं के हवाले कर दिया। तुम बैठ सभी को सम्भालो। क्योंकि अभी तो यह ज्ञान मिला है पिछाड़ी में कोई भी याद न आये। अन्त काल जो स्त्री सिमरे बड़े2 महल बिलडींग आद होंगे तो अन्त में वह याद पड़ेंगे। परन्तु तुम से थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जावेंगे। बाप तो है ही गरीब निवाज़। कोई पैसे होते भी मनहुसता दिखलाते हैं। यह नहीं समझते पहले2 वार्स तो (शिवबाबा) यह है। भगवान वास तो भक्ति मार्ग में भी है। उनको देते हैं ना। ईश्वर अर्थ क्यों देते हैं समझते हैं ईश्वर के नाम पर गरीबों को देंगे तो ईश्वर एवजा में देंगे। दूसरे जन्म में मिलता तो है ना। यहां फिर कहते हैं सभी पर ग्रहण लगा हुआ है। कहते हैं ना दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप को तो सभी कुछ दान दे दिया। शरीर मित्र सम्बन्धी आद जो कुछ भी है सभी बाबा को सर्वश्रद्धा समर्पण कर दिया। बाबा यह सब आप का है। सारी सृष्टि पर ग्रहण लगा हुआ है। वह कैसे एक सेकण्ड में छूटता है, काले से गोरे कैसे बनते हैं यह अभी तुम जानते हो। फिर औरों को समझाना भी है। अन्दर में समझते हैं समझा न सके सकते हैं वह भी काम के

नहीं। बाप कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। हम तुमको अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। तुम देते जाओ तो भारत पर तथा सारी दुनिया पर जो राहू का ग्रहण बैठा हुआ है वह उतर जाये। फिर बृहस्पत की दशा हो जायेगी। अच्छा बृहस्पत की दशा होती है। अभी तुम जानते हो भारतखास और आम सारी दुनिया पर ग्रहण है। अभी वह कैसे छूटे। यह तो बाप है ना। बाप तुम से सभी कुछ पुराना लेकर विश्व की बादशाही देते हैं। इसको बृहस्पत की दशा कहा जाता है। मुक्तिधाम में जो जाते हैं उसको बृहस्पत की दशा ही कहेंगे। बृहस्पत की दशा वाले तो बहुत पहले2 ही आवेंगे। देरी से आने वालों को क्या मिलेगा। बृहस्पत की दशाही नहीं जो स्वर्ग का सुख भोगे। यह दशायें भी बहुत समझने की हैं। पढ़ाई में भी दशायें बैठती है ना। बाबा नाम भी लेते हैं। इस समय अनुसार सर्विस बुल मनोहर है। गंगे हैं। अच्छे2 हैं। इन पर बृहस्पत की दशा है। जो सर्विस नहीं करते हैं उन पर कहेंगे राहू की दशा। दशायें चलती है। इस समय बाप वर्णन करते हैं। वह फिर भक्ति मार्ग में चलती है। मनुष्य तो बिलकुल ही बेसमझ हैं। हम भी बेसमझ थे। अभी बाप ने पूरी समझ दी है। पूरा समझदार बनने से पहले2 जावेंगे। ट्रान्सफर होना है। यहां से ट्रान्सफर हो जावेंगे स्वर्ग माला में। वहां से फिर आवेंगे अपना वर्सा पाने नम्बरवार। बच्चों को यह ज्ञान बिलकुल नहीं था। बहुत हैं जिनको यह ज्ञान बहुत अच्छा लगता है, कोई तो भूटू हैं कुछ भी समझते नहीं। ऐसे मत समझो कोई याद करते हैं। बाबा कशिश करते हैं तो याद करते हैं। बाबा की कशिश आती है। सुबह को आकर बैठने में बाबा को मज़ा बहुत आता है। बच्चों का देखकर खुश होते हैं। जैसे कि बगीचे में खड़े हैं। यह बड़ा अच्छा बच्चा है। इन में ज्ञान नहीं। यह मिडीयम है। सभी सेन्टर्स के बच्चों को देखते हैं। नाम रूप शरीर जरूर याद आता है। फलाने की आत्मा। लिखते भी ऐसे हमेरी आत्मा को तूफान आती है। यह होता है। बाबा भी कहेंगे इनकी आत्मा बहुत अच्छी है। इनकी आत्मा सेकण्ड ग्रेड की है। जितना2 योग होगा उतना ज्ञान भी अच्छा लगेगा। सर्विस भी करेंगे। ज्ञान नहीं है तो योग से भी सर्विस कर सकते हैं। फायदा तो है ना। मुख्य है ही याद और ज्ञान। अलफ और बे। अलफ को तो जरूर याद करनापड़े। बाप को याद करते विश्व के मालिकपना ले लेते हैं। यह दुनिया तो पुरानी होती जाती है। नया मकान बन कर तैयार होता है तो दिल होती है अभी नये में जाकर बैठें। फिर पुराने से ममत्व टूट जावेगा। बाप मिशाल तो ठीक देते हैं। वह है हद की बात यह है बेहद की बात। बाप कहते हैं मैं तुम्हारे लिए तीरी पर बहिस्त लाया हूं। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। छीछी तमोप्रधान आत्मातो जा न सके। सन्यासी लोग कहते हैं आत्मा तो निर्लेप है। बाकी शरीर छीछी बनता है। इसलिए शरीर को स्नान कराने जाते हैं। बाकी आत्मा कहां जाये। आत्मा में ही तो खाद पड़ती है ना। सोने में खद पड़ती है तो ज़ेवर भी ऐसे ही बनते हैं। आग में चीज़ पवित्र होती है। अभी तो बहुत बड़ी आग लगेगी। शरीर में सभी जल जावेंगे। आत्मा तो नहीं जलेगी। आत्मा है ही अमर। वह लोग समझते हैं आत्मा परमात्मा लीन हो जाती हैं। वह सभी है भक्तिमार्ग की बातें। अभी बाप कहते हैं भक्तिमार्ग की बातें सुना नहीं। जो बाप सुनावे समझावे वह बातें सुना। सब से मीठी बात करो। कोई से कड़वी बात नहीं। किसको दुःख दिया तो गोया रावण के मत पर चले। बाप तो कब किसको दुःख नहीं देते। यह भी पुरुषार्थ है। बाप के संग में रहते2 कोशिश यही करते हैं मेरे द्वारा किसको दुःख न हो। गाया भी जाता है सत का संग तारे कुसंग बोरे। रावण का संग बोरे। सत के संग से चढ़ती कला होती है। रावण के संग से उतरती कला। यह और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। इसलिए बाबा याद प्यार भी नम्बरवार देते हैं। राजाई बननी है। सभी तो राजा नहीं बनेंगे। हरेक को चलन से समझ सकते हैं। यह राजा बनना है या नहीं। सर्विस बुल बहुत लवली चाहिए। बाबा नाम भी लेते हैं। ज्ञान की खुशबूएं फलाने से लो। बाबा नाम नहीं लेते हैं। नहीं तो सभी कहेंगे हमको अच्छे2 फूल दो। हमको थर्ड ग्रेड फोर्थ ग्रेड क्यों देते हो। महारथी घोड़े सवार प्यादे तो है ना। अच्छा ओम।